अप्रैल-जून, 2023

समसामयिक हाइकु संचयनिका

हाइकु मञ्जूषा

संपादक

प्रदीप कुमार दाश 'दीपक'

हाइकु मंजूषा परिवार की ओर से

नव संवत्सर

की हार्दिक शुभकामनाएं

संपादक : **हाइकु मञ्जूषा**

हाइकु मञ्जूषा त्रैमासिक

(सदस्यता शुल्क)

एक वर्ष	**-**	**400 रुपये (रजिस्टर्ड डाक से)**
पाँच वर्ष	**-**	**1600 रुपये (रजिस्टर्ड डाक से)**

Account detail : PRADEEP KUMAR DASH

A/c No. : 3282604179, IFSC : CBIN0281208

Central bank of India, Sitapur, (C.G.)

Mob. 7828104111

हाइकु मञ्जूषा

समसामयिक हाइकु संचयनिका

अप्रैल-जून : 2023 (त्रैमासिक)

संपादक

प्रदीप कुमार दाश 'दीपक'

संरक्षक

डॉ. मिथिलेश दीक्षित

संपादक मण्डल

अविनाश बागड़े (नागपुर)

देवेन्द्र नारायण दास (बसना)

केशव मोहन पाण्डेय (नई दिल्ली)

प्रकाशन स्थल : साँकरा, जिला-सारंगढ़ (छ.ग.) पिन – 496554, मो.नं. – 7828104111

संपादकीय...

प्रिय हाइकुकार मित्रों, सादर सस्नेहाभिवादन ! जापानी हाइकु काव्य शैली को हमने भावाभिव्यक्ति का माध्यम चुना है अस्तु हाइकु रचना के मर्म को जानना आवश्यक है। हाइकु महज 5-7-5 की खानापूर्ति या वाक्य योजना मात्र नहीं, हाइकु की तीन पंक्तियों में शब्दों का सदुपयोग एवं काव्यात्मकता का समावेश महत्वपूर्ण है। 'हाइकु' केवल 17 अक्षर की छोटी कविता होने के कारण शब्द त्रुटि रहित हों इस पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

हाइकु में अनावश्यक शब्दों की आवृत्ति नहीं होनी चाहिए। केवल कोरे विचार एवं परंपरागत हाइकु लेखन न करते हुए सूक्ष्म प्राकृतिक घटनाएं जो हमें प्रभावित करती हैं, उन पर बिंब प्रधान हाइकु लिखें तो हम उत्कृष्ट हाइकु लेखन की ओर बढ़ेंगे...

आप सभी रचनाकार मित्रों से उत्कृष्ट हाइकु सृजन की अपेक्षा के साथ समसामयिक हाइकु संचयनिका 'हाइकु मञ्जूषा' अप्रैल-जून 2023 का छठवां अंक आपके कर कमलों सहर्ष सौंपते हुए हिन्दू नव वर्ष की अनेकानेक शुभकामनाएं व हार्दिक बधाइयाँ ज्ञापित करते हैं। इति शुभम....

~ प्रदीप कुमार दाश 'दीपक'

संपादक : हाइकु मञ्जूषा

इस अंक के हाइकुकार

अजय चरणम्, अभिषेक जैन, अमिता शाह 'अमी', अयाज़ ख़ान, अलंकार आच्छा, अविनाश बागड़े, डॉ. आनंद प्रकाश शाक्य, आभा दवे, डॉ. आभा माथुर, आरती परीख, आशा ज्योति, इन्द्र कुमार दीक्षित, इंदिरा किसलय, ए. ए. लूका, ओम हरित, अंकुर सहाय ‘अंकुर’, कमल सिंह गुर्जर, कल्पना कामदार, कल्पना दुबे, कविता नेमा 'काव्या', कुन्दन पाटिल, केशव यादव 'सारथी', कैलाश वाजपेयी, गीता पुरोहित, गंगा पांडेय ‘भावुक’, चक्रधर शुक्ल, चिन्मय शुक्ल, चंद्रभान मैनवाल, जतिन्द्र औलख, जय कुमार अजय, प्रो. जवाहर मुथा, ज्योतिर्मयी पंत, देवेन्द्र नारायण दास, निगम राज़, निर्मला सुरेंद्रन, निशा मित्तल, नीता अग्रवाल, डॉ. नीता सुशील अग्रवाल, पवन कुमार जैन, प्रतिमा प्रधान, प्रदीप कुमार दाश 'दीपक', प्रमोदिनी शर्मा, प्रवीण सिंह बी. सिन्दल, पुष्पा सिन्हा, पुष्पा सिंघी, पूनम मिश्रा 'पूर्णिमा', डॉ. पूर्वा शर्मा, बन्दना गुप्ता, बुशरा तब्बसुम, डॉ. भारती वर्मा 'बौड़ाई', भीकम सिंह, भुपिन्दर कौर, मधु गुप्ता 'महक', मनीष कुमार श्रीवास्तव, डॉ. मिथिलेश दीक्षित, डॉ. मीता अग्रवाल ‘मधुर’, मीनाक्षी कुमावत 'मीरा', मीरा सिंह ‘मीरा’, मंजु महिमा, डॉ. मंजू यादव, रविवाला ठाकुर, राजकिशोर राजपूत, राजीव कुमार, राजीव नामदेव 'राना लिधौरी', राजेन्द्र सिंह राठौड़, रामेश्वर बंग, रूपा माला, रूबी दास "अरु", रंजन कुमार सोनी, विनय मोहन्ता, विनय श्रीवास्तव, डॉ० विष्णु शास्त्री 'सरल', विज्ञा गोस्वामी ‘विगु’, वृंदा पंचभाई, शशि मित्तल ‘अमर’, स्वाति गुप्ता 'नीरव', सरला भंसाली, सविता बरई 'वीणा', सीमा शर्मा, सुधा मिश्रा द्विवेदी, सुनीता दीक्षित 'श्यामा', सुभाष शर्मा, सुरेन्द्र बांसल, डॉ. सुरंगमा यादव, सुलोचना सिंह, डॉ. सुशील शर्मा, हरावती लकड़ा, त्रिलोचना कौर, ज्ञान भंडारी, श्रवण चोरनेले 'श्रवण', श्रीराम साहू

उत्कृष्ट हाइकु

चाह है मेरी
पतझड़ के संग
मैं झड़ जाऊँ।

~ अजय चरणम्

पुराना छुटा
शिफ्ट हुई तारीखें
नये घर में।

~ अभिषेक जैन

खास थे कल
आम कर दिया है
उफ.. वो पल !

सुकून ढूंढ़े
उछलते जज्बात
चांदनी रात।

भक्ति का पथ
चले मन का रथ
छूटे स्वारथ।

निशा के नेत्र
सौम्य शीतल चंद्र
निहारे पुष्प।

बादल घड़ा
उंडेलता है पानी
भीगती धरा।

मन मंदिर
विरह की घंटियाँ
पीड़ा आरती।

~ अमिता शाह 'अमी'

पिघलती है
मन में जमी बर्फ़
यादों की आँच।

उजड़ा ठूँठ
लग रहा सजीव
नदी के पास।

स्तब्ध हैं वृक्ष
खो गयी है चिड़िया
खोजे क्षितिज।

~ अयाज़ ख़ान

ठण्ड से हारा
समय से पहले
दुबका रवि।

तटों का बल
हद में रहता है
नदी का जल।

सोया कुम्हार
चाक पर ही खत्म
किस्सा घड़े का।

तुम्हारी यादें
साँसों का समंदर
मेरे अंदर।

करे निर्यात
शहर को जवानी
बुढ़ाता गाँव।

पद की दौड़
उठाने को पादुका
मची है होड़।

बादल अड़े
हलधर के नैन
बरस पड़े।

~ अलंकार आच्छा

नव अंकुर
नवीन आस जगी
नूतन प्रण।

सूरज हँसा
दिशाएँ पुलकित
भोर सुहानी।

रहे हरित
रक्तिम पटल पे
हर जीवन।

तीखेपन पे
हमेशा हरियाली
विजय भव।

तीक्ष्णता पर
शांति के हरे पत्ते
बीस ही रहे।

मात करता
असहिष्णुता पर
धीरज सदा।

लाल मिर्चियां
उठा न सकी मुंह
हरित क्रांति।

भोर के माथ
सूरज का तिलक
दिवस शुभ।

~ अविनाश बागड़े

उड़े पतंग
हवा के संग संग
भरे उमंग।

कहे पतंग
कहीं कट न जाऊँ
बदलो ढंग।

वाह पतंग
उड़ते सब देखें
कटी को कौन।

चहके खग
मन गुनगुनाये
रहा न जाये।

प्रकृति नटी
अचम्भित जगत
शुभ नर्तन।

सुरभि बहे
पलाश कुछ कहे
हृदय दहे।

जय जवान
सीमा पर प्रहरी
दृष्टि गहरी।

~ डॉ. आनन्द प्रकाश शाक्य

रवि किरण
छाए नील गगन
जगत मग्न।

बहती नदी
कहानी कहे सदी
बैठी किनारे।

पेड़ की डाली
हँसती जब-जब
हवा है चली।

मौन पर्वत
चरण पखारते
नदियाँ द्वारे।

निशा पुकारे
अब तो आओ प्यारे
लो साँझ विदा।

सुर्ख अंगारे
ठंड में लगे प्यारे
गरमी देते।

शीतल जल
मचाये हलचल
नदिया तल।

आधा चंद्रमा
नभ से है झांकता
तन ढांकता।

टूटी झोपड़ी
थाली में आ के गिरी
चाँद की रोटी।

ओस की बूंदें
किरणों में नहाई
चमक उठी।

मस्त हवाएँ
पेड़ों को दे संदेश
निद्रा में लीन।

नदी किनारे
बैठी है शाम सजी
सूर्य निहारें।

~ आभा दवे

नव पल्लव
ललछौंहे कोमल
आया बसंत।

ठंडी बयार
बादल घनघोर
आई है वर्षा।

यादों की भीड़
पगलाया सा मन
पंख पसार।

~ डॉ. आभा माथुर

चुगने आते
हमारी तन्हाईयाँ
यादों के पंछी।

उड़ जायेगी
चुलबुली चिड़िया
हुई सयानी।

रवि का ठेला
समंदर में गिरा
सांझ की बेला।

संध्या काल
समुद्र में नहाये
पथिक सूर्य।

संध्या फलक
क्षितिज के मस्तिष्क
सूर्य तिलक।

सूरज रथ
क्षितिज पर थमा
गोधूलि बेला।

क्षितिज बैठा
दिनचर्या सुनता
सूरज दादा।

सूरज पस्त
खाड़ी एवं क्षितिज
लहुलुहान।

जलते रहे
मिलन की आश में
मन दीपक।

बोझिल रिश्ते
सैलाब उमड़ता
मन सागर।

फड़फड़ाती
चुलबुली ख्वाहिशें
मन पिंजर।

बयां करती
मन की सिलवटें
आँखों की नमी।

स्मरण-पंछी
घोंसला बना बैठे
मन मुँडेर।

स्मरण सुर
छमकने लगते
मन नुपूर।

चहक रही
रंगबिरंगी यादें
मन मुँडेर।

सरक रही
नीले ख्वाबों की कश्ती
मन सागर।

पिंजर तोड़
उड़ने को बैचैन
मन का पंछी।

शब्दों के घाव
दर्द जीवन भर
मन बावरा।

भीगा बदन
बारिश की झड़ियाँ
सूखा मनवा।

बदरा छाए
कुदमकुद करें
मेंढक मन।

मनभावन
आंगन में नाचती
शिशिर धूप।

बरखा बूँदें
तालबद्ध बरसे
मनवा नाचें।

खनक रहे
मन गुल्लक में ही
यादों के सिक्के।

शरीर लेटा
सपनें बुन चला
चंचल मन।

खनका रहा
अनबुने सपनें
मन गुल्लक।

छाया तिमिर
जलाया मन दीप
हुआ उजाला।

उडना चाहे
दूर गगन छाँव
पंछी सा मन।

मन मंदिर
आरती दीप जले
आलोक भरे।

अँधेरा भागा
इरादों का सूरज
मन में जागा।

पिघला गई
दफ्तर की थकान
बेटी की हँसी।

पेड़ में फँसी
उड़ने को बेचैन
फटी पतंग।

श्वेत जूगनु
डेरा जमाये बैठे
कांपती घाटी।

सर्द हवाएँ
रवि जला न सका
धूप अँगीठी।

जीवन थाल
रिश्ते तोड़े सँवारे
शब्द जायका।

होंठों में क़ैद
अनकहे अल्फाज़
आँखों से गिरे।

तृण तृण से
ओस मोती चुराये
लुटेरी धूप।

क्षितिज बैठा
दिनचर्या सुनता
सूरज दादा।

आग का गोला
क्षितिज ने निगला
छाया अँधेरा।

रेत में लिखें
समंदर लहरें
दिल की चीखें।

पेड़ बिछाये
बसंत स्वागत में
पीली पत्तियां।

जंगल काटा
पेन्सिल से बनाया
सुहाना बाग़।

सूखा गुलाब
किताब में सिमटा
बसंत राज।

धूप में खड़े
ऑक्सीजन बाँटते
पेड़ व पौधे।

शैल शिखर
भास्कर आगमन
स्वर्ण कलश।

निगल गई
क्षितिज की लालिमा
बैरन निशा।

अंधेरा छाया
रफूचक्कर हुआ
अपना साया।

कांटों की गली
महफूज़ महके
छोटी सी कली।

छत में बाग़
मेज़ पे गुलदस्ता
वासंती फाग।

~ आरती परीख

याद सताई
प्यार की बगिया में
रैन बिताई।

तुम्हारी आँखें
भटकती हुई सी
किसे तलाशें ?

जिंदा रहते
नाम, काम, सम्मान
मृत्यु के बाद।

जीवन नैया
जीने के लिए चली
नहीं खिवैया।

मंजिल दूर
अनायास चुभते
पथ के शूल।

बहती जाए
आवारा मस्त हवा
खुशबू लाए।

नया सवेरा
खुशनुमा माहौल
खिला चेहरा।

लाए बहार
सुखद-सी बहार
हरसिंगार।

पर्दा हटाया
गगन मध्य देखा
चाँद मुस्काया।

धुन के पक्के
आजादी के दीवाने
उत्साही बच्चे।

बसंत आया
सरसों के खेतों में
यौवन छाया।

जीवन मिला
वसुंधरा मुस्काई
अंकुर खिला।

ठोकर खाती
धारा, लक्ष्य समीप
चलती जाती।

जीवन रैना
घनघोर अंधेरा
सुप्त चेतना।

ईश्वर - गुरु
जीवन पतवार
खेवनहार।

~ आशा ज्योति

सर्दी की रात
ठिठुर रहे गात
डरा प्रभात।

गलन बढ़ी
नकचढ़ी धूप है
मुंडेर चढ़ी।

~ इन्द्र कुमार दीक्षित

छुआ पराग
पाँखुरियों से झरा
प्रणय राग।

~ इंदिरा किसलय

मोती सा लगे
नन्ही ओस की बूंदें
छटा बिखेरे।

सुहाना लगे
मौसम का मिजाज
जिया तरसे।

~ ए. ए. लूका

लगता डर
साय साय हवाएं
ठंड अलग।

गहरा घाव
फागुन की चुभन
बदली रीत।

~ ओम हरित

आया बसंत
पात नए आ गए
बौराए आम।

~ अंकुर सहाय 'अंकुर'

बोया आतंक
ख़ून के आंसू रोता
पड़ौसी मुल्क।

विश्वास टूटा
अपनत्व से छूटा
बेपेंदी लोटा।

~ कमल सिंह गुर्जर

उड़े आकाश
पतंग संग मन
रीझे साजन।

~ कल्पना कामदार

शान्ति के दूत
उड़ते हैं उन्मुक्त
श्वेत कपोत।

~ कल्पना दुबे

उल्लास छाया
कुदरत की माया
बसंत आया।

~ कविता नेमा काव्या

जड़ चेतन
आकर्षण विहिन
शांति अपार।

सुख आधार
तुलसी घर घर
शुभ संस्कार।

पतंग उड़ी
आकाश सतरंगी
आनंद मस्ती।

~ कुन्दन पाटिल

दुबली देह
ओढ़े दुर्बल दूब
धुंध-दुशाला।

धरती खिली
विरसता का अंत
आया बसंत !

~ केशव यादव 'सारथी'

कैसा मौसम
कोहरे का कहर
डूबा शहर।

~ कैलास वाजपेयी

साँझ जो ढली
गगन ने ओढ़ ली
तारा चुनर।

नई कल्पना
कलम का कमाल
देखे दुनिया।

रंगीले फूल
ईश्वर चित्रकार
खिली धरती।

~ गीता पुरोहित

बुद्धि विवेक
जीवन के हैं साथी
करो आरती।

आनन्द ढूढें
कहाँ मिले बाज़ार
बसे मन में।

मशीनी मनु
यंत्रवत जीवन
एकांतवास।

बौराया आम
कुंचाया है महुआ
भीनी सुगंध।

ये पतझड़
देता नवजीवन
पोषक जड़।।

~ गंगा पांडेय 'भावुक'

आँखों में पीर
उमड़ी संवेदना
मन अधीर।

दो बूँद पानी
धरती की वेदना
ओस ने जानी।

तितली डरी
छेड़छाड़ भौंरों की
बागों में बढ़ी।

कुछ न कहा
परित्यक्ता का दंश
उसने सहा।

नींद न आई
बसंत ने हिय में
आग लगाई।

परिवर्तन
नए द्वार खोलती
मैना बोलती।

बावली हुई
धूप लेती लड़की
साँवली हुई।

मेघ निर्मोही
भेदभाव देख के
दुखी बटोही।

हवा बैरन
इस कदर डोले
चेहरे बोले ।

भौंरे उत्पाती
कलियाँ डरीं-डरीं
माली जज़्बाती।

मौसम क्रूर
हवा उड़ा ले गयी
मेघों को दूर।

घुट्टी में माँ ने
संस्कार ही पिलाये
बच्चे मुस्काये।

जीभ-दुधारी
छोटी-छोटी बातों में
निकले आरी।

झरने हाँफे
लकदक पहाड़
मैदान काँपे।

शीतलहर
घर में दुबकाए
पारा गिराए।

तुषाराघात
ओलों की बरसात
दिन में रात।

~ चक्रधर शुक्ल

चाय की प्याली
कागज़ व कलम
जज़्बात लिखूं।

शीत का अंत
प्रफुल्लित है धरा
आया बसंत।

धानी चूनर
रंग बिरंगे फूल
टांके बसंत।

घर बिटिया
दहलीज की धूप
चिड़िया फुर्र।

नन्ही गौरैया
थिरके बेटी पाँव
चहके भोर।

~ चिन्मय शुक्ल

सरसों घोले
अपना पीला रंग
बसंत संग।

~ चंद्रभान मैनवाल

झील का जल
पड़ी सूर्य किरणें
बिखरा सोना।

~ जतिन्द्र औलख

ज़ख्मी ज़ज्बात
रिश्तों पे है आघात
चुभती बात।

~ जय कुमार अजय

फूल ने कहा
परसों कली था मैं,
पत्तों में था मैं !

~ प्रो. जवाहर मुथा

वर्ष का अंत
नववर्ष आरंभ
नई उम्मीद।

प्यार का पुल
जोड़ती है दो कुल
बेटी मृदुल।

खिले पलाश
छाई वन लालिमा
मन हर्षित।

झूमें डालियाँ
किंशुक पुष्प खिले
रंग कलश।

~ ज्योतिर्मयी पंत

फूल सा जीना
मौसम के थपेड़े
चूप सहना।

पाखी चहके
फूलों के उपवन
वसंत आया।

~ देवेन्द्र नारायण दास

छुए आकाश
परिंदे की उड़ान
हुई जवान।

किससे कहें
समय की रेत पे
सहज बहें।

बदले रंग
ऋतु परिवर्तन
वक्त के संग।

मन बगुला
भगताई करता
बन पगला।

धरती नाचे
अम्बर ने वासंती
पत्र जो बाँचे।

रंगों की शोखी
वासंती आंगन में
लगती चोखी।

आया वसंत
निर्वसनित दशा
आये न संत।

नवयौवन
धीरे से पाँव धरे
चिहुँके मन।

प्रेम करते
ज़माने में ताउम्र
फूल झरते।

ध्यान धरते
जीवन साथी संग
हम तरते।

~ निगम राज़

आशा गठरी
मन द्वारे ठहरी
भाग्य प्रहरी।

मौसम बैठा
मुँह फुलाए आज
ठंड की गाज।

~ निर्मला सुरेंद्रन

आतुर मन
छूने को आसमान
भोर के स्वप्न।

~ निशा मित्तल

रिश्ते संबल
समेटे गर्माहट
खुशी आहट।

सबसे चोखा
नदी सागर रिश्ता
संग अनंत।

~ नीता अग्रवाल

मन सागर
छिपे भावों के मोती
चुन पिरोती।

रात्रि परोसे
पात अंजुरी ओस
सूर्य मेहमां।

~ डॉ. नीता सुशील अग्रवाल

जुगनू जागा
अँधेरे का दानव
सकपकाया।

~ पवन कुमार जैन

ढलता दिन
ले यादों की बारात
कटे न रात।

प्रेम जाल का
पर्दा करते फ़ाश
फूल गुलाब।

चना अकेला
फोड़ सके न भाड़
ढीली निवाड़।

आस लगा के
बैठा कबसे जाड़ा
हँसेगी धूप।

भद्दर जाड़ा
धूनी रमा के बैठा
रवि लापता।

ख़ुश ही रहें
डालो नहीं जंजीर
बेटी नज़ीर।

~ प्रतिमा प्रधान

प्रेम अलख
रीझ गया बादल
वर्षा भू पर।

नयन नीर
खुले घर के भेद
प्रकट पीर।

कौन है खास
हे ईश सब आप
हम तो दास।

छैनी की मार
पत्थर से प्रतिमा
पाया आकार।

ठिठुरी रात
गुनगुनी सी धूप
पंछी की चाह।

ध्यान का धन
समाधि में समाया
उजला मन।

धान के ढेर
चहकती चिड़िया
दाने बिखेर।

~ प्रदीप कुमार दाश 'दीपक'

विशाल वृक्ष
बीज का बलिदान
नव पल्लव।

गिरता वृक्ष
हा.. अब ठौर कहाँ
उदास पंछी।

खिले पलाश
उदास विरहिणी
तप्त हृदय।

गिरता पत्ता
आज मेरी बारी है
कल तुम्हारी।

गुलमोहर
छतरी रंगीन सी
सुखद छाँव।

तुषार पात
सपने धराशाई
स्तब्ध कृषक।

बरसे ओले
निराश अन्नदाता
उजड़े खेत।

~ प्रमोदिनी शर्मा

नये संदर्भ
सृजन के आयाम
गीतों के झूले !

कहाँ नसीब
सौंधी माटी की गंध
ऊँचे फ्लैट में !

ये प्राणवायु
है साँसों का संगीत
रखे चिरायु।

रैड अलर्ट
आँधी तूफान ओले
मौसम साफ।

वादों के वन
बेहया सियासत
रंगा सियार।

धूप पलती
बरगदों की छांव
बदला गांव।

अमलतास
फूलों वाले झूमर
आया फाल्गुन।

हवा विषाक्त
साँसों की वसीहत
पेड़ गवाह।

प्यासी है मैना
गुम होती गौरैया
पेड़ की आह।

पेड़ की बात
जंगल बोलते हैं
जीने का हक़।

पुष्पित तरु
कोयल का सितार
मृदु कंठ सा।

नीम का पेड़
रामबाण औषधि
घर का वैद्य।

सिन्दूरी आभा
राज्य पुष्प रोहिडा
मरु श्रृंगार।

वन दोहन
प्रकृति का जवाब
महाप्रलय !

धूप का प्यार
सर्द मौसम और
आग के फूल।

सृजन शील
स्मृति के परिदृश्य
स्वप्नों की सेल्फी !

ज़िन्दगी मेरी
फ़कीर की चादर
कद से छोटी।

वन दोहन
प्रकृति का जवाब
महा प्रलय।

गर्म धरती
वो सूखती नदियां
वन विनाश।

वादों के वन
बेहया सियासत
रंगा सियार।

~ प्रवीण सिंह बी.सिंदल

संक्रांति काल
बाँट रही प्रकृति
बर्फ रेवड़ी।

बेचैन पिकी
गाये राग बसंत
रूठे क्यों पिया।

ऋतु बदली
अनंग मन काम
गीत गा उठा।

फूल पाँखुरी
देख मकरंद भरी
चूमे बयार।

जागी प्रकृति
प्रसन्न मन आये
अनंग राज।

गूँजा दिगंत
बौराई अमराई
आया बसंत।

खोई गलियाँ
कटे पीपल नीम
गाँव लापता।

~ पुष्पा मेहरा

गांव है प्यार
शहर में है रोटी
बेचारी भूख।

~ पुष्पा सिन्हा

जलधि पार
भारतीय संस्कृति
खेवनहार।

पतंग सेना
पवन वेग संग
बिखेरे रंग।

विश्वास-डोर
उड़ चली पतंग
नभ को छूने।

कटी पतंग
बाल गोपाल दौड़े
हिय उमंग।

साँसों की डोर
पतंग-सी ज़िन्दगी
जाने ना ठौर।

फूलों की माला
संविधान है सूत्र
देश निराला !

माटी तिलक
राष्ट्र प्रेम का दीप
धन्य जीवन !

~ पुष्पा सिंघी

जड़ें सुस्ताए
पात भी अलसाए
फूल मुस्काए।

~ पूनम मिश्रा 'पूर्णिमा'

क्या खूब गढ़ा !
अनपढ़ हाथों ने
शिक्षा भवन।

भूख पुरानी
लगी ताज़ी-स्वादिष्ट
बासी रोटियाँ।

खड़ा है लिये
हेड मास्टर रवि
धूप की छड़ी।

जेठ में दौड़े
श्रमिक नंगे पाँव
दमड़ी जोड़े।

सोचता यही
चूसूँ बर्फ का गोला
स्वेदित रवि।

~ डॉ. पूर्वा शर्मा

जोकर हम
हंसाना है करम
छुपा के ग़म।

~ बन्दना गुप्ता

धुंधले पृष्ठ
उकेरता सूरज
दृश्य आखर।

~ बुशरा तबस्सुम

हँसी बेटियाँ
खिलखिलाया घर
फैला उजास।

~ डॉ. भारती वर्मा 'बौड़ाई'

धुंध में दिखी
ज्यों कस्तूरी हिरण
सूर्य-किरण।

चंद चिराग
गाँवों में ज्यों ढूँढते
तम के राज।

मिथ्या निकला
देख न पाये दृग
सोने का मृग।

स्वप्न था चिर
उड़ा कर ले गया
रावण फिर ।

~ भीकम सिंह

ठहरा चाँद
मदहोश चाँदनी
निशा दीवानी।

मयंक आया
बहकी पुरवाई
यामा दीवानी।

~ भुपिन्दर कौर

कमल नैन
खुल गए रवि के
शुभ प्रभात।

ध्वनि घंटा की
जगमग मंदिर
नवल ऊर्जा।

पुष्प सुवास
आया है मधुमास
नव आभास।

खिली है कली
फैला रही सुगंध
आया बसंत।

फागुन आया
खिलखिलाए ढाक
झरते पात।

पुराने मित्र
बीती हुई वे यादें
आँखो में चित्र।

~ मधु गुप्ता "महक"

ठंड की भोर
घड़ी पे टकटकी
सूर्य की ओर।

रेखाखण्ड सी
जिन्दगी की डगर
रेखा पे टिकी।

प्रसन्न मन
सहज व्यवहार
जीवन धन।

नवल शिक्षा
ऑनलाइन कक्षा
आँखों पे चश्मा।

चुनाव दौर
हर नुक्कड़ पर
चाय ही ठौर।

~ मनीष कुमार श्रीवास्तव

देखा सुमन
छा गया मधुमास
मन के वन।

आये घूमने
सर्दियों की धूप में
रंग फूल में !

फूलों के हार
सजा गया माधव
मन के द्वार।

जोगी वसंत
माया से रंग देता
पूरा दिगन्त ।

पृथ्वी की शान
किरणें करा रहीं
धूप से स्नान ।

देखो रे आज
फूलों ने पहन ली
पत्तों की फ्राक !

शोभा अनन्त
फूलों से सजा हुआ
दूल्हा वसंत !

बसा हुआ है
मन-उपवन में
चिर वसंत !

~ डॉ. मिथिलेश दीक्षित

अवधी हाइकु

पतझरवा
चुराय कै लै गवा
पेड़ पतवा !

उडै चिरैया
मुँह का छुपाय कै
हंसै चिरैया !

झुलवा झूलै
पात-पात छुई कै
चिरवा झूमै !

छोड़ किनार
आगे बढ़ त जात
पानी कै धार !

संझा बतिया
अम्मा जलावै दीया
आवौ जिजिया !

~ डॉ. मिथिलेश दीक्षित

कठिन रास्ते
गुलदान बेचते
बिके सपने।

कटा जंगल
दिखे बस भवन
लुप्त गौरैया।

~ डॉ. मीता अग्रवाल 'मधुर'

तहों में रेत
झांसे देते किनारे
बेबुझ सच।

दुबकी दूब
ओढ़ बर्फ दुशाले
धरा की गोद।

पंख स्वप्निल
उड़ाये नभ पार
रोके देहरी।

उकेरे स्वप्न
मानस कैनवास
कोरा संसार।

आँखों ने पढ़ी
मौन भरी मुस्कान
खुली किताब।

सर्दी की धूप
आँख मिचौली खेले
मेघों की ओट।

विचार घन
उड़े चित्त के नभ
बेकाबू मन।

थेप घरौंदा
बिटिया ने बसाया
प्यारा संसार।

सिंदूरी शाखें
लद रहे पलाश
बसंत मास।

बेवक्त वर्षा
छत से टपकते
मां के अरमां।

रोज खिलते
मुस्कानों के गुलाब
सदा बहार।

कुतर जाते
एहसासों की शाखें
दीमक मन।

~ मीनाक्षी कुमावत मीरा

नभ में छाए
बादल घनघोर
मन थिरके।

~ मीरा सिंह 'मीरा'

सर्द सुबह
पहचान खो बैठी
धुंध लिपटी !

पीली पगड़ी
बाँध आया बसंत
रीझी धरती।

कत्ल सत्य का
लाल हुआ मानव
धरती फटी।

चंद्र प्रकाश
दमके नन्हे पुष्प
अवनि केश।

~ मंजु महिमा

तोड़ता सूर्य
कोहरे का गुरुर
हार न माने।

चाय अमृत
बूढ़े जवान हुए
उम्र दराज़।

~ डॉ. मंजू यादव

सरिता तट
बालू में दुबकते
कच्छप दल।

~ रविबाला ठाकुर

खिला है रवि
रश्मियों ने रच दी
सुन्दर छवि।

ऋतु शिशिर
हुए उत्तरायण
वृद्ध मिहिर।

शीतल रवि
मकर में निदाघ
बदली छवि।

भोर पूस की
मखमली कोहरा
धरा ने ओढ़ा।

बही पछुआ
शरमाई नदिया
धूप ने छुआ।

वन सघन
टेसू आग लगाये
नदी बुझाये।

आया फागुन
किसलय मुस्काये
भ्रमर गाये।

बही पूरवा
अमरैया लुभाये
कोयल गाये।

उड़ी तितली
पराग हरषाये
पुष्प लजाये।

मधु या हाला
यायावर जीवन
बड़ा निराला।

माँ वट वृक्ष
मृदु जिसकी छाँह
पुष्पित शिशु।

दहका टेसू
बयार संवारती
फूल के गेसू।

टेसू के रंग
फागुन खेले फाग
नदी के संग।

पकी फसल
कनक सी दमके
गेहूं बालियाँ।

बीता फागुन
धूप-बयार करें
गलबहियाँ।

राग बसंत
कुहुके कोकिलन
गूंजे दिगंत।

कटे जंगल
खग खोजे घौंसला
टावर पेड़।

ठूँठ सा तन
अतृप्त आकांक्षाएं
भटके मन।

हुआ विहान
उड़ गया पखेरू
नीड़ वीरान।

सूखा शजर
उजाड़ा मानव ने
खग का घर।

खारे सिंधु में
समर्पित सरिता
खोजे मिठास।

~ राजकिशोर राजपूत

राहें तमाम
मंज़िल की शौकीन
एहतराम।

~ राजीव कुमार

बुंदेली हाइकु

आसों तो जाड़ों
कर रऔ है आड़ो।
कोंडों तो बारो।

बीच गैल में
करतइ तमासों
डरो है आडो।

कटे न जाड़ौ
दो-दो पल्ली है चापें
हडरा कांपे।

~ राजीव नामदेव 'राना लिधौरी'

पंछी उड़ते
पर रैन बसेरा
अपना नीड़।

ठूँठ सा धौली
शीत हवाओ संग
झरते पात।

मन परिंदा
भरे लम्बी उडान
वक्त के साथ।

टूटी झोपड़ी
दीन की जिजीविषा
ओढ़े गुदड़ी।

टूटा शाख से
फिर जुड़ न पाया
आवारा पत्ता।

जमे हिम से
अब कैसे पिघले
रिश्ते मन के।

छूटा स्टेशन
चलने लगी रेल
नई मंजिल।

तुषार कण
धरा पर बिखरे
ओस के मोती।

हँसती धूप
उतरी आंगन में
खिले चेहरे।

सिंदूरी शाम
आ अब लौट चले
अपने घर।

नयन सूखे
पिया विरह सखी
अन्दर भीगे।

कितने मन
हर रोज बदलता
एक आदमी।

बेनूर वन
खिल उठा पलाश
नूर आ गया।

गाय रँभाती
बछड़े उत्साहित
माँ घर आई।

सांप छोड़ते
फिर बीन बजाते
नेता सपेरे।

लाड़ली बेटी
सप्तपदी के बाद
हुई पराई।

फाल्गुनी हवा
नाचते सूखे पात
गीत सुनाए।

नाचते शब्द
पत्र पर उतरे
मन की बात।

रूत बदली
हवा मे हर्ष छाया
फाल्गुन आया।

~ राजेन्द्र सिंह राठौड़

फैले खुशबू
गुलाब सा महका
शब्दों के फूल।

~ रामेश्वर बंग

बरसी बूँद
प्यास बुझी कली की
महकी फ़िजा।

~ रूपा माला

बर्फीली सर्दी
चीड़ ने तुहिन का
ओढ़ा पिछौरा।

पर्ण विहीन
विप्रलंभ सा वृक्ष
वन में खड़ा।

नया विहान
उम्मीद की कूंची से
रचे विधान।

महुआ झरे
शुभ्र बिछौना देख
ज्योत्स्ना उतरी।

प्रेम का तीर
दिल को भेद गया
प्यार छलका।

~ रूबी दास "अरु"

मेरी बिटिया
चहके दिन रैन
सोन चिरैया।

गुलाबी ठंड
रजाई लगे अंग
सुहानी रात।

सर्द हवाएं
कंपकंपाती देह
चाहे अलाव।

गिद्ध नजर
नोचने को आतुर
जीवित देह।

भगवा ध्वज
समता विखेरता
अपने पथ।

नीली छतरी
सुशोभित पताका
विजय रथ।

~ रंजन कुमार सोनी

मधुर बोलें
कटु स्मृतियाँ भूलें
गिरह खोलें।

~ विनय मोहन्ता

माटी अस्तित्व
चुक रहा है आज
विस्फोट शेष।

विभ्रभी घन
कुहासा है सघन
क्षितिज पर।

~ विनय श्रीवास्तव

तन काँपता
धुंधाच्छन्न दिशाएँ
सूर्य लापता।

बेटी आधार
पाती सृष्टि विस्तार
सुखी संसार।

सुनाई देती
वासंतिक आहट
आनंद देती।

रंग छलका
नव रवि किरणें
प्रेम छलका।

~ डॉ० विष्णु शास्त्री ' सरल '

मेरा डगर
तुम साथ अगर
पूरा सफर।

कर श्रृंगार
देखा तुझे ही मैंने
नयन द्वार।

पाखी की बात
अधूरी सी ये रात
जख्मी जज्बात।

~ विज्ञा गोस्वामी 'विगु'

शीतल भोर
सुनहरी किरणें
पड़ी भू पर।

सूरज छिपा
बदरी की ओट में
शंकित धरा।

बढ़ता ताप
बदलता मौसम
महके बाग।

आया बसंत
उत्तरायण संग
खिली बगिया।

बढ़ता ताप
उत्तरायण बेला
रवि निखरा।

मन उमंग
उत्तरायण संग
बदला रंग।

सूरज फेरा
ऋतु परिवर्तन
शीत गमन।

रवि किरणें
उजास बिखेरती
धरा निखरी।

आया बसंत
उत्तरायण संग
खिली बगिया।

बढ़ता ताप
उत्तरायण बेला
रवि निखरा।

मन उमंग
उत्तरायण संग
बदला रंग।

रवि किरणें
उजास बिखेरती
धरा निखरी।

मन पतंग
आशा की डोर संग
उड़ी दिगंत।

प्रेम की ऋतु
दुल्हन सी संवरी
धरती प्यारी।

मदनोत्सव
महके उपवन
फूले वसंत।

कटते पेड़
कराहती गौरैया
टूटा घोंसला।

~ वृंदा पंचभाई

आया बसंत
पितांबर पहने
खुशी अनंत।

पत्ते लापता
दहका है पलाश
फागुन आया।

~ शशि मित्तल "अमर"

सूरजमुखी
है पुष्प अलबेला
रवि निहारे।

कोहरा बन
जल की नन्ही बूंदे
भू पे बरसे।

भक्ति के भाव
नेत्र के कोने पर
अश्रु चमके।

प्रकृति देख
अन्तर्मन में गूंजे
शब्द अनेक।

भोर वंदन
पत्र यौवन पर
मोती स्पंदन।

टूटते रिश्ते
दहलीज को लांघे
घर बिखरे।

कोयल काली
पंचम स्वर गाती
राग निराली।

जिह्वा चटोरी
रोज थाली में ढूंढे
नया जायका।

प्रकृति रूप
फाल्गुन में बसंत
निखरे खूब।

~ स्वाति गुप्ता 'नीरव'

उजली भोर
साथ शुभ संकल्प
हर्ष विभोर।

~ सरला भंसाली

धुंध को ओढ़
टिमटिमाता रवि
कांपता कवि।

~ सविता बरई "वीणा"

सर्दी सौतन
रजाई में दुबकी
संग साजन।

~ सीमा शर्मा

रक्ताभ टेसू
पिय प्रेम की आस
बौराया मन

~ सुधा मिश्रा द्विवेदी

कोमल कली
बेघर होके चली
राख न मिली।

~ सुनीता दीक्षित 'श्यामा'

जीवन आशा
बेटी है अनमोल
कम न तौल।

गाँधी अजब
आदर्श है कठिन
फोटो गजब।

होली के रंग
चढ़े चेहरे पर
उतरे कैसे।

गर्मी बढ़ती
बदलता मौसम
प्यासी धरती।

सूखे दरख्त
पंछी ढूढें कोटर
भूखे मरते।

सूखते पत्ते
बिगड़ता मौसम
हवा गरम।

~ सुभाष शर्मा

ठिठुरी शाम
जले याद अलाव
देह के धाम।

ख़ुद की छांह
यादों के संग चली
पकड़े बांह।

न चाहो धूप
जग की परिभाषा
अंधड़ कूप।

आँख का पानी
थोडा़ सा अपनत्व
जीवन धानी।

प्रेम की व्यथा
जीवन और मृत्यु
रहते ख़फ़ा।

मन के भाव
अविरल प्रवाह
ढूंढ़ते थाह।

सूना आकाश
नभ गंगाएं सूखीं
चित उदास।

ख़ुद की छांव
यादों के संग चली
पकड़े बांह।

~ सुरेंद्र बांसल

गर्वित पिता
बेटी के भाल पर
विजय टीका।

मान बढ़ाया
बेटियों ने पिता का
हाथ बँटाया।

फैले हैं व्याल
बढ़ रहीं बेटियाँ
पग संभाल।

बेटी सुमन
एक संग सजाये
दो उपवन।

दहेज क्या दूँ ?
कोई धन न दूजा
बेटी से बड़ा।

उठी उमंग
चहचहाने लगे
भाव विहंग।

सुखद अंत
पतझर दे जाता
रम्य वसंत।

प्रेम कविता
वसंत रचयिता
कुहू गायिका।

भोर बाँटती
फूलों का उपहार
किरन हार !

भाव विह्वल
सुधियाँ जब आयीं
बहा काजल।

~ डॉ. सुरंगमा यादव

ऋतु बसंत
चहक उठी धरा
फूली सरसों।

~ सुलोचना सिंह

छँटती धुंध
जीवन है निर्द्वन्द
गगन मन।

अंतस द्वंद्व
जीवन अनुबंध
हारते मन।

युद्ध के साये
अनंत जिजीविषा
लाशों के ढेर।

राष्ट्र समाज
डूबती सी आवाज़
अकेला जन।

शिशु सा वर्ष
नयी किलकारियाँ
नया जीवन।

वृद्ध सदिश
पुराना कैलेंडर
कोने में पड़ा।

विमल वर्ष
अभिनंदन हर्ष
नव उत्कर्ष।

पर्व संक्रांति
हर तरफ शांति
मिटती भ्रांति।

तिलज गुड़
संगम में डुबकी
मनस स्फूर्त।

हँसते मुख
रंग भरे गुब्बारे
फगुनाहट।

रंगे चेहरे
फगुनिया सी धूप
नेह बरसे।

टेसू के फूल
मादक अमराई
गाँव की फागें।

पोपला मुँह
बच्चों ने रंग डाला
दादी मुस्काई।

मिलते मन
झरते अहंकार
होली के रंग।

अंतस यात्रा
भावों की पतवार
शब्दों की नाव।

जीवन चित्र
कविता कैनवास
भाव तूलिका।

सूक्ष्म स्पंदन
विस्तारित अनंत
कविता कर्म।

~ डॉ. सुशील शर्मा

कोहरा घना
सूरज पे पहरा
पंछी उदास।

धुंध घनेरी
उगता रवि खेले
आँखमिचौली।

कहर भारी
हिमपात है जारी
शीत प्रकोप।

गांव वीरान
लगते शमशान
शीत प्रधान।

महुआ झरे
दिलखुश नजारे
नैन निहारे।

~ हरावती लकड़ा

घिसी कथरी
संग दुबकी सर्दी
साथ में सोती।

गुड़ को भाया
काले तिल का साथ
लोहड़ी रात।

~ त्रिलोचना कौर

सूखा पलाश
खिल उठा ज्यों पुष्प
बौराया गंध।

लदी मंजरी
आहट है आमों की
सुगंध छाई।

~ ज्ञान भंडारी

पीपल पात
कोमल मन डोले
दिन औ रात।

पूजा का धाम
मंदिर न मस्जिद
मन में राम।

सपने बुनें
अपनों की खातिर
दिल की सुनें।

चिड़िया रानी
चहके आँगन में
भोर सुहानी।

गौरैया- गान
हर डाल पे झूमे
नव- विहान।

नवल प्रभा
सारा जगत जगा
ऊषा किरण।

गाएं सखियाँ
बिखराती खुशियाँ
बाल टोलियाँ।

करे नमन
धरणी को किरण
भरे आलोक।

एक ही आशा
जीवन को समझें
प्रेम की भाषा।

~ श्रवण चोरनेले 'श्रवण'

नकली रंग
क्या करता असर
गया उतर।

आसमान में
सूरज का घेराव
मेघा गरजें।

खुला आँगन
खिलखिलाती धूप
सदाबहार।

लोगों की दुआ
औषधि बन जाती
प्रभु की दया।

सच फरार
सदियाँ-युग बीते
जारी तलाश।

पेट व पीठ
आगे बोलना मना
रिश्ता अजीब।

सूरज ढला
फिर मिलेंगे कल
कहते चला।

~ श्रीराम साहू

हाइकु मञ्जूषा के सदस्य

(1) डॉ. मिथिलेश दीक्षित (संरक्षक)

(1) रुबी दास (पंच वर्षीय), (2) डॉ. सुशीला सिंह (पंच वर्षीय), (3) तुकाराम पुंडलिकराव खिल्लारे (पंच वर्षीय), (4) देवयानी बनर्जी (पंच वर्षीय), (5) डॉ. श्रद्धा वाशिमकर (पंच वर्षीय), (6) सूर्यनारायण गुप्त सूर्य (पंच वर्षीय), (7) अलंकार आच्छा (पंच वर्षीय)

(1) सावित्री कुमार (वार्षिक), (2) सतीश राठी (वार्षिक), (3) डॉ. सुरंगमा यादव (वार्षिक), (4) अजय चरणम् (वार्षिक), (5) डॉ. कल्पना दुबे (वार्षिक), (6) अंजू श्रीवास्तव निगम (वार्षिक), (7) डॉ. सुभाषिनी शर्मा (वार्षिक), (8) डॉ. नीना छिब्बर (वार्षिक), (9) बन्दना गुप्ता (वार्षिक), (10) इन्दिरा किसलय (वार्षिक), (11) राकेश कुमार भारद्वाज (वार्षिक), (12) डॉ. विष्णु शास्त्री सरल (वार्षिक), (13) निर्मला सुरेन्द्रन (वार्षिक), (14) डॉ. निहाल चंद्र शिवहरे (वार्षिक), (15) पुष्पा सिंघी (वार्षिक), (16) डॉ. मंजू यादव 'मृदुल' (वार्षिक), (17) वर्षा अग्रवाल (वार्षिक), (18) दीपाली ठाकुर (वार्षिक), (19) श्रवण चोरनेले 'श्रवण' (वार्षिक), (20) किरण मिश्रा (वार्षिक), (21) आरती परीख (वार्षिक), (22) प्रतिमा प्रधान (वार्षिक), (23) कश्मीरी लाल चावला (वार्षिक), (24) वृंदा पंचभाई (वार्षिक), (25) आभा दवे (वार्षिक), (26) दिलीप सिंह दीपक (वार्षिक), (27) डॉ. पूर्वा शर्मा जी (वार्षिक), (1928) मधु गुप्ता (वार्षिक), (29) गोपीकिशन शर्मा (वार्षिक), (30) राधाबल्लभ अग्रवाल (वार्षिक), (31) सुरेन्द्र बांसल (वार्षिक) , (32) राजेन्द्र सिंह 'राठौड़' (वार्षिक), (33) प्रवीण सिंह बी. सिन्दल (वार्षिक), (34) चन्द्र प्रभा (वार्षिक)

सर्वभाषा ट्रस्ट
नई दिल्ली

से प्रकाशित जापानी विधा की पुस्तकें

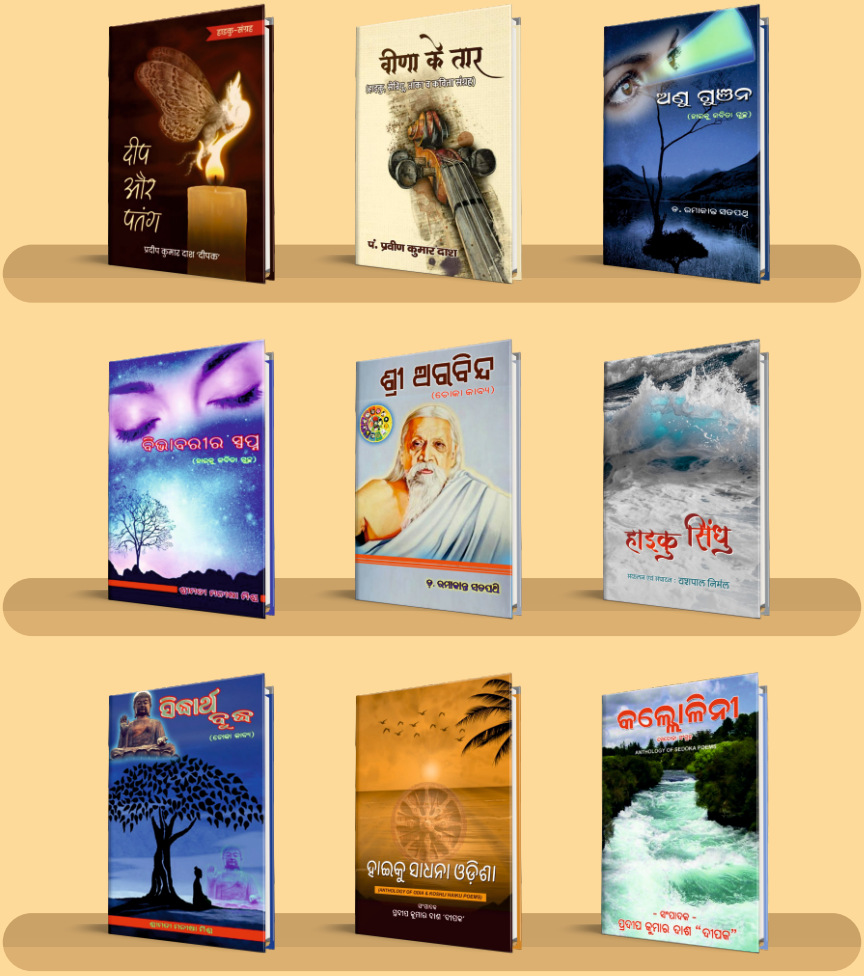

8178695606, 9205461387

www.sarvbhashatrust.com sbtpublication@gmail.com

प्रदीप कुमार दाश 'दीपक'

संपादक

हाइकु मञ्जूषा

प्रकाशन

सर्वभाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली

8178695606, 9205461387